आभार

विकास की चर्चा होना, एक प्रगतिशील समाज एवं राष्ट्र की अद्वितीय विशेषता है। यह प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान समय में भी अल्पविकास की राजनीति द्वारा विकास के लक्ष्य को प्राप्त करना, एक केन्द्र बिन्दु बना रहा है। क्षेत्र एवं समाज के सन्दर्भ में विकास के आयाम भी बदलते रहे हैं। अतः विकास के विभिन्न आयामों एवं ऐतिहासिक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारत के सभी राज्यों में विकास के स्तर अलग–अलग है।

इस सन्दर्भ को ध्यान में रखते हुए मैनें अपने शोध प्रबन्ध "**पूर्वी उत्तर प्रदेश में अल्प विकास की राजनीतिः आजमगढ़ जनपद के विशेष सन्दर्भ में**" का चयन तार्किक एवं वैज्ञानिक रूप से किया है। इस शोध प्रबन्ध के शीर्षक चयन से लेकर शोध प्रबन्ध के सारगर्भित एवं सफल लेखन तक के कार्य में अपने श्रद्धेय शोध निर्देशक **प्रो० शशिकान्त पाण्डेय** का मैं आजीवन ऋणी रहूँगा, जिनके ज्ञानपूर्ण कुशल मार्गदर्शन में शोध कार्य बिना किसी व्यवधान के गतिशील रहा और गुरूवर का वात्सल्यपूर्ण प्रेम और कुशल मार्गदर्शक से शोध प्रबन्ध अपनी सम्पूर्णता को प्राप्त किया है।

इसी क्रम में मैं अपने विभाग के प्रो० रिपुसूदन सिंह, प्रो० सार्तिक बाग, डॉ० सिद्धार्थ मुखर्जी, डॉ० प्रीति चौधरी एवं अन्य गुरूजनों का सदा आभारी रहूँगा, जिनके दिशा–निर्देश प्राप्त होने से शोध प्रबन्ध कार्य को पूरा करने में सहायता प्राप्त हुई। साथ ही मैं राजनीति विज्ञान विभाग के सभी कर्मचारियों का सहृदय से आभारी हूँ, जिनका समय–समय पर सहयोग प्राप्त होता रहा।

शोध अध्ययन के क्रम में बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली, दिल्ली विश्वविद्यालय नई दिल्ली, तीनमूर्ति पुस्तकालय नई दिल्ली, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ, अमीरउद्दौला पब्लिक लाईब्रेरी लखनऊ, तथा राजकीय पुस्तकालय आजमगढ़ के पुस्तकालयाध्यक्षों के प्रति विशेष रूप से आभार व्यक्त करता हूँ जिनके सहयोग के बिना शोध कार्य पूर्ण करने में कठिनाई होती। इसके अतिरिक्त, मैं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का आभारी हूँ जिसके द्वारा प्रदत्त छात्रवृत्ति जे.आर.एफ. के कारण आर्थिक मदद प्राप्त हुई जिससे मेरा शोध कार्य बिना किसी बाधा के पूर्ण हो सका।

इसी क्रम में मैं अपनी माता श्रीमती चन्द्रावती देवी, पिता श्री बिसुन प्रजापति, मामा श्री रामनाथ प्रजापति, मामी श्रीमती शोभा देवी बड़े भाई अजय, संजय, कमलेश कुमार, मिथिलेश

कुमार एवं छोटे भाई राधे श्याम, मिन्दू बिपिन, विकास एवं अपनी बहन संगीता, मंजू, जया तथा भाभी श्रीमती नीलम देवी, श्रीमती मनीषा देवी का सदैव आभारी एवं ऋणी रहूँगा, जिनका हमेशा सहयोग एवं आशीर्वाद प्राप्त होता रहा है और शोध प्रबन्ध के लेखन हेतु प्रेरित एवं उत्साहित करते रहें।

इसी क्रम में मैं अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सरोज देवी का हमेशा ऋणी रहूँगा, जिसके त्याग, प्रेम, प्रेरणा, सहयोग एवं उत्साहवर्द्धन ने शोध प्रबन्ध को सम्पूर्णता प्रदान करने में सहायता प्रदान की।

इसी क्रम में मैं अपने गुरूवर डॉ० पंकज सिंह, मित्र वीर कुमार राय, रोहित कुमार, माया भारती, रंजना उपाध्याय, दीप्ति सिंह, चन्द्रशेखर सहाय, अरविन्द कुमार, डॉ० अनील कुमार, डॉ० आनंद प्रताप सिंह, डॉ० उपेन्द्र कुमार, डॉ० रामबचन कुमार, डॉ० शैफाली सिंह, संतोष कुमार, दिनेश कुमार एवं सभी मित्रों का आभारी हूँ।

अन्त में मैं श्री सुबोध कुमार शुक्ला एवं श्रीमती रिंकी शुक्ला का हृदय से आभार व्यक्त किया है जिन्होंने मेरे शोध कार्य को पूरा करने में सहयोग दिया।

राजीव कुमार प्रजापति